स्मृति दिवस कर्मातीत बनने का प्रेरक

- ब्र.कु. सूर्य,माउण्ट आबू

कलि के इस विकराल काल में भी अनेक महान् विभूतियों ने समय-समय पर वसुंधरा के आँचल को सुशोभित किया, परंतु उनके चले जाने के बाद पुनः धरती माँ की कोख सूनी हो गई। कुछ ही महान पुरुष ऐसे हुए जो इस जननी को अपना महान उत्तराधिकारी दे सके। उनमें सर्व महान हुए, नवयुग के सृष्टा प्रजापिता ब्रह्मा, जिन्होंने जगती को सहारा भी दिया और धीरज भी बंधाया और अनेक महान वत्स इसके आँगन को प्रफुल्लित करने वाले प्रदान किये जो कि साकार में मानो उनके ही रूप हैं। किसी भी महान व्यक्ति की महानता इस बात से भी आंकी जा सकती है कि वह कितने महान पुरुषों का निर्माण करता है।

जनवरी मास प्रत्येक ब्रह्मा-वत्स के लिए अंतर्मुखी व एकांतवासी बनने का समय होता है। यह कुछ प्रेरणाएं लेकर आता है और वरदान देकर चला जाता है। जो योगी इस समय का पूर्ण लाभ उठाते हैं वे स्मृति स्वरूप होकर कर्मातीत स्थिति की ओर बढ़ जाते हैं। कर्मातीत अवस्था एक अत्यंत निराली, परम-आनंद युक्त, परमात्मा की समीपता की स्थिति है। तो आओ हम सब पिताश्री के पद चिन्हों पर चलकर कर्मातीत स्थिति को प्राप्त करें।

कर्मातीत अवस्था क्या है?

राजयोग-अभ्यास का लक्ष्य कर्मातीत होना है। राजयोग कर्मों में कुशलता लाकर, कर्मों को दिव्य बना देता है। कर्मातीत अर्थात् कर्मों से अतीत। पिछले 63 जन्मों में प्रत्येक आत्मा ने विकर्मों का जो विपुल भण्डार बनाया है, उसे योगाग्नि में भस्म करके विकर्म-मुक्त होना कर्मातीत बनना है।

हम देखते हैं कि प्रत्येक कर्म, उसके संकल्प व उसका चिन्तन या बोझ मनुष्य पर प्रभाव डालता है। परंतु कर्म करते हुए, कर्मों के प्रभाव से परे हो जाना-इसे कर्मातीत अवस्था कहा जाता है। किसी के पास चाहे अथाह धन, सम्पत्ति व वैभव हों और वह उनका प्रयोग भी करता हो, परंतु पदार्थों का प्रयोग योगयुक्त होकर करना व पदार्थों का उपभोग अनासक्त होकर करना-ये है कर्मातीत स्थिति। ऐसा न हो कि पदार्थ ही हमारा उपभोग करते रहें।

एक मनुष्य को प्रजापिता ब्रह्मा कहना-शायद मनुष्यों के गले न भी उतरता हो, परंतु जो उन्हें जानते हैं, जिन्होंने उनके ब्रह्मा होने के कारणों पर ध्यान दिया हो वे इस सत्य से आँखें नहीं मूंद सकते। वे अनुभव कर सकते हैं कि कैसे पिताश्री भाग्य-विधाता प्रजापिता ब्रह्मा ही थे जिन्होंने इस सृष्टि पर वे आदर्श निर्माण किये जिन्हें अपनाकर मानव देवता और संसार स्वर्ग बन जाएगा। वे इस धरती पर रहकर एक महान ऋषि बने और सर्वश्रेष्ठ कर्मातीत अवस्था को प्राप्त हुए। उन्हीं के अनुभवों के आधार पर यहाँ कर्मातीत अवस्था का उल्लेख किया गया है।

अपने पूर्व जन्मों के व वर्तमान के विकर्मों के कारण मनुष्य अनेक बंधनों में बंधा हुआ है। तन, मन व संबंधों के बंधन उसे चिंतित करते हैं। परंतु कर्मातीत अवस्था पूर्ण बंधनमुक्त अवस्था है। जब मनुष्यात्मा के संपूर्ण बंधन समाप्त हो जाएं, कुछ भी उसे योगयुक्त स्थिति से नीचे न लाए, यही योगी की कर्मातीत अवस्था है।

परंतु जैसा कि शास्त्रवादी लोग मानते हैं कि इस मुक्त स्थिति में आत्मा पाप व पुण्य दोनों कर्म से मुक्त हो जाती है, ऐसा ईश्वरीय मत नहीं है। इस मुक्त कर्मातीत अवस्था में विकर्मों का संपूर्ण अभाव व पुण्य कर्मों की संपूर्णता होती है। कर्मातीत अवस्था के समीप पहुँचा हुआ योगी विकर्माजीत बन जाता है अर्थात् उससे कोई सूक्ष्म विकर्म भी नहीं होता और पुण्य कर्म भी वह संपूर्ण अनासक्त भाव से करता है। इन्हीं पुण्य कर्मों का बल उसे कर्मातीत से संपूर्ण बनाने में मदद करता है।

पिताश्री ब्रह्मा बाबा ने ऐसी ही श्रेष्ठ कर्मातीत अवस्था को प्राप्त किया। स्मृति-दिवस हमें भी इसी प्रकार बंधन-मुक्त बनने की प्रेरणा देता है। इस कर्मातीत अवस्था के समीप पहुँचकर मन पूर्णतया विरक्त हो जाता है, उसके सभी आकर्षण समाप्त हो जाते हैं और वह निरंतर योग की आनंदकारी स्थिति में स्थित हो जाता है।

कर्मातीत बनने में विघ्न

यों तो सबसे बड़ा विघ्न, ऊँचे लक्ष्य पर दृढ़ न होना व उसे प्राप्त करने में अलबेलापन ही है। परंतु कई योगी ऐसी अवस्था प्राप्ति की इच्छा रखते हुए भी अपने सामने एक दीवार अनुभव करते हैं। वह दीवार क्या है? जो कभी-कभी तो उन्हें दिखाई भी नहीं पड़ती और यदि दिखाई देती भी है तो उसकी सुंदरता को देखकर वे उसे तोड़ना नहीं चाहते। यह विशेष विघ्न या दीवार है-स्वार्थ की। जीवन में स्वार्थ की कहानी बड़ी लम्बी होती है। पग-पग पर प्रत्येक मनुष्य पहले स्वार्थ का ही ध्यान रखता है, इसे ही ध्यान में रखकर वह कोई काम करता है या निर्णय लेता है। हम सब या तो लौकिक कार्यों में व्यस्त हैं या अलौकिक कार्यों में। दोनों में ही हमारा स्वार्थ हमें बंधन में बांधता है। यदि कोई मनुष्य अपने सूक्ष्म स्वार्थ को महसूस करके इस बंधन को तोड़ दे तो वह तेज़ी से कर्मातीत अवस्था की ओर बढ़ सकता है। हमें कर्मातीत होने के लिए सर्व प्रकार के बंधनों से मुक्त होना है।

बंधन व उनसे मुक्ति...

आज के मानव की ज़िन्दगी कहीं बोझ तले दबी हुई दिखाई देती है। न जाने कितने बंधनों का बोझ सिर पर ढ़ोते हुए मनुष्य अपने जीवन की यात्रा करता है। सबसे पहले मानव अपने नकारात्मक विचारों को मन में उठाकर चलता है जिससे सीधे ही उसके शारीरिक सेहत पर विपरीत प्रभाव पड़ता है। ऐसे में अगर हमें इन बंधनों के बोझ से मुक्त होना है तो अपने आप को थोड़ा सा अवकाश देकर देखना होगा कि कहीं हमारी ज़िन्दगी को हम स्वयं ही तो जटिल नहीं बना रहे! न जाने कितने बंधन हैं, जिनसे हम मुक्त भी हो सकते हैं। तो आओ हम उन बंधनों को जानें और उनसे मुक्त होने का संकल्प लें।

बंधन व उनसे मुक्ति

जैसे यदि किसी मनुष्य को रस्सी से बांध दिया जाए तो वह कुछ भी नहीं कर सकता। वह परवश हो जाता है। इसी प्रकार प्रत्येक मनुष्यात्मा अनेक बंधनों में बंधी है। हमें पहले ज्ञान-बल से अपने बंधन खोलने हैं, फिर योगाग्नि में उन्हें जला देना है।

पहला बंधन-मन का बंधन

मनुष्य चाहता है तीव्र पुरुषार्थ करना, परंतु मन उसे करने नहीं देता। व्यर्थ, हीन, निराशात्मक व कमज़ोर विचार बार-बार मन को अपने अधीन कर लेते हैं। ज्ञान-बल से विचारों को महान व शक्तिशाली बनाकर हम इन बंधनों से मुक्त बनें।

दूसरा बंधन-व्यर्थ बोल व व्यर्थ कर्मों का बंधन

व्यर्थ व विस्तार के बोल बोलकर, मनुष्य निरंतर अपनी शक्ति को नष्ट करता है। वो भूल जाता है कि योगी बोल का रस नहीं लेते, वे तो मौन का रस लेते हैं। तो हम चेक करें कि जो बोल हमने बोला या जो कर्म हमने किया, वह फल देने वाला है या निष्फल है। यदि निष्फल है तो उसका त्याग कर दें।

तीसरा बंधन-तेरे-मेरे का

इस भावना से ही मनुष्य तनाव व परेशानी के बीज बोता है। इससे मुक्त होने के लिए बेहद की वृत्ति बनाने की आवश्यकता है।

चौथा बंधन-स्वभाव, संस्कार का

पुराने स्वभाव-संस्कार भी मनुष्य को बरबस बांध लेते हैं। तो जैसे बाबा सदा ही अपने अनादि आदि संस्कारों के स्वरूप बनकर रहे, हम भी सदा इसी स्वरूप में रहें कि ये पुराने संस्कार मेरे नहीं, मेरे तो ये दिव्य संस्कार हैं। चाहते न हों और संस्कार कर्म करा दें-यह है बंधन और हमारे स्वभाव संस्कार हमें

- शेष पेज 7 पर